।। चतुर्थ पाठ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक शेर के सम्मुख जाकर । राजी हो गया शेर को पाकर ।।
झपटा वीर गरदन को पकड़ी । बिन तलवार हाथ नहीं लकड़ी ।।
शेर सोहना बालक पाकर । लिपट गया वो पूँछ हिलाकर ।।
चढ़ गया बर्बरीक पीठ के ऊपर । शेर उछलता अपने बल पर ।।
अहिलवती जब दौड़ के आई । शेर ने अपनी पूँछ हिलाई ।।
पीठ पे लाला चढ़ा हुआ है । शेर तेज से दबा हुआ है ।।
बोला लाला आ मेरी माता । ये तो जानवर मुझे सुहाता ।।
इस पर चढ़ कर दौड़ लगाऊँ । छुप करबन में तुम्हें न पाऊँ ।।
एक जानवर ये ही पाया । जिसके संग में खेल रचाया ।।
ऐसे शेर कहाँ पायेंगे । उनको पकड़ यहाँ लायेंगे ।।

दोहा - अहिला स्नेह में डूब कर, ली बलिहारी सोय ।
मन में सोचे बलवानी के, पुत्र बली ही होय ।। क ।।
आवाज लगाई जोर से, शेर करी गुंजार ।
शेर शेरनी दौड़ कर आये, बाँध के लैन कतार ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
शेर शेरनी पूँछ हिलाते । गरजे तो जंगल दहलाते ।।
लाला देख के राजी हो गया । शेर पे चढ़के खेल में खो गया ।।

शेर शेरनी आनन्द पावें । बर्बरीक संग खेल रचावें ।।
दौड़ करें किलोल उछाला । बर्बरीक हँसता मतवाला ।।
अहिला बोली फिर समझाकर । शिव पूजा का समय बताकर ।।
आओ बेटा देर होत है । समय कभी नहीं बाट जोहत है ।।
साँझ की बेला अब घिर आई । सूरज डूबत देवे ललाई ।।
शेर सभी अब घर जावेंगे । भोर होवत ही आ जावेंगे ।।
पंख पंखेरु ढूँढे बसेरा । रात आ रही लिए अन्धेरा ।।
शेरों ने गरजना लगाई । अहिलवती को प्रणाम पुगाई ।।
अपन घर चले बांध कतारें । जोर गरजना संग उचारें ।।
अहिला लाले को संग लेकर । चली शेरों को आशीष देकर ।।
फूल लिये हैं शिव को चढ़ाने । समझ रही लाले को पढ़ाने ।।
पहरेदार सब बाट निहारें । करें सफाई जगह बुहारें ।।
बर्बरीक संग अहिला आई । सेवक गण के खुशियाँ छाई ।।

दोहा - आसन बिछाओ मौज में, शिव प्रतिमा के पास ।
पास बिठाओ लाड़लो, जो जीवन की आस ।। क ।।
शिव स्तुति श्री गणेश से, कीनो मन्त्र उच्चार ।
हे शिवशंकर बम बम भोले, तुम्हीं मेरे आधार ।। ८२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
दोनों हाथ से पुष्प चढ़ाये । बर्बरीक ने भी हाथ बढ़ाये ।।
जैसे माता करती जावे । लाला शिव पे पुष्प चढ़ावे ।।
अहिलवती ने आरती कीनी । बर्बरीक ने बलिहारी लीनी ।।
हर हर हर महादेव पुकारें । माँ और बेटे संग उचारें ।।

निर्मल जल का कलश चढ़ाया । बर्बरीक ने भी हाथ बढ़ाया ।।
ध्यान मगन हो अहिला गावे । कोकिल कण्ठ से गीत सुनावे ।।
अहिला झुक प्रणाम करत है । देवे परिक्रमा कदम धरत है ।।
लाला सब कछु देखता जावे । मन ही मन में ध्यान लगावे ।।
बर्बरीक ने फिर पलक लगाई । शिव दरबार की झलक सुहाई ।।
पार्वती जी बैठी संग में । शिवजी बैठे भंग के रंग में ।।
गल सरपों का हार सुहावे । लाला सब कछु देखता जावे ।।
त्रिशुल खड़ी है डमरु लटके । शिव गण बैठे पीछे हटके ।।
गोदी बैठा बाल निराला । मानव देही सुण्ड सुण्डाला ।।
पलक मूंद कर देखे माया । अहिला के कछु समझ न आया ।।
दूर बैठ गई मौन धार कर । करती आरती वार वार कर ।।
लाले की ये लीला सुहाई । प्रथम पहर समाधि लगाई ।।
भीड़ लगी है दरबार में भारी । देव मुनि और सत वृत धारी ।।
कर रहे स्तुति देवन आकर । धन्य हो रहे दर्शन पाकर ।।

दोहा - गन्धर्व सुनावें रागनी, नृत्य अप्सरा संग ।
साज सुरीले हृदय मोहने, बाजे ढोल मृदंग ।। क ।।
पार्वती पर छवि छा रही, लुभ जावे हर कोय ।
कैलाशपति की जय जय होवे, प्रबल गूंज रही होय ।। ८३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक न जब पलक उघारी । जै जै शिव की वाणी उचारी ।।
बहुत देर तक ध्यान लगन हो । शिव की लीला देख मगन हो ।।
फिर माता को बचन सुनाया । चरण पकड़ने हाथ बढ़ाया ।।

अहिला आलिंगन कर बोली । तुमको पाकर मैं धन्य होली ।।
बर्बरीक कह कर मन मुस्काया । देखी मात मैं अजब ही माया ।।
था एक योगी पलक लगाये । जटा जूट और भभूत रमाये ।।
पर्वत पर जिसका डेरा है । मुनियों ने आकर घेरा है ।।
वो योगी तो पलक न खोले । देवन गांवे वो नही बोले ।।
कौन है माता ऐसे योगी । महा तपस्वी सिद्ध का जोगी ।।
तुम उसका हमें भेद बताओ । पर्वत ऊपर साथ ले जाओ ।।
उस योगी का दर्शन चाहता । शीघ्र चलो संग मेरे माता ।।

दोहा - सुन के कहानी लाल की, छाई खुशी भरपूर ।
वो योगी तो यहीं है बेटा, हमसे नहीं है दूर ।। क ।।
जब चाहो तब मिल लेवो, ध्यान लगन धर धीर ।
उस योगी से बेटा अपना, जन्म जन्म का सीर ।। ८४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
वो योगी शिवजी कहलाते । जिसकी पूजा हम कर पाते ।।
दर्शन तुमको जिसने दिया है । उसी ने सारा भार लिया है ।।
उसी का नाम रटो मन लाकर । दर्शन देवेंगे खुद आकर ।।
जग के रचैया हैं त्रिपुरारी । दयावान भोला भण्डारी ।।
आओ अब तुम्हें ओर बताऊँ । क्षत्री धर्म की नीति सिखाऊँ ।।
माँ बेटे बन माँही आये । बन राजा को अति सुहाये ।।
इतने में एक नाहर आया । भाग रहा था मन घबराया ।।
अहिला बोली सुन मेरे लाला । इस नाहर का बन रखवाला ।।
इसके पीछे शिकारी आवे । वो इसको अभी मारना चाहवे ।।

भागा लाला कहाँ शिकारी । पकड़ के लाऊँ शरण तिहारी ।।
भागा भागा दूर गया है । शेर शिकारी ढूँढ लिया है ।।
बर्बरीक ने उसको ललकारा । धनुष शिकारी ने संधारा ।।
बाण पे बाण छोड़ता जावे । लाला पकड़ के तोड़ता जावे ।।
जब वो शिकारी थक कर हारा । बर्बरीक ने मुक्का मारा ।।
प्राण पखेरु शिकारी सोया । एक चीख मारी और वो रोया ।।

दोहा - बर्बरीक ने बाण को, लीनो हाथ उठाय ।
टूटे तीर साथ में, घसीट शिकारी लाय ।। क ।।
अहिला सम्मुख आ गई, रुक गया बलि महान ।
बोल लाला ये है शिकारी, लगा लिया है ध्यान ।। ८५ ।।

माँ अहिलवती को अपने पूत्र पे क्रोध आता है और वह अपने पूत्र से कहती है ।

।। भजन ।।

(तर्ज - मारवाड़ी)

बेटा माँगे वचन थासूँ माँवड़ी, म्हासुँ साँचो कोल भराय,
सुण म्हारै दिल की बातड़ली ।। टेर ।।

बेटा क्षत्री धरम मत भूलीजे,
कमजोर नै मतना सताय ।। सुण म्हारै ... ।। १ ।।

जो हार गयो, बल रुठ गयो,
बै निर्बल नै अपनाय ।। सुण म्हारै ... ।। २ ।।

दुर्बल पर हाथ न उठ पावै,
दुर्बल सर हाथ धराय ।। सुण म्हारै ... ।। ३ ।।

भिक्षुक कोई ना खाली जावै,
चाहे देणो पड़ै तन-प्राण ।। सुण म्हारै ... ।। ४ ।।

मैया आज्ञा तेरी सिर धारियो,
म्हारै सर पर रखदे हाथ ।। सुण म्हारै ... ।। ५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बोली अहिला लाल नेत्र कर । तुमने कहा मैं लाऊँ पकड़ कर ।।
इसको तूने मार गिराया । कैसा तुमने जोश दिखाया ।।
ये दुर्बल और निर्बल प्राणी । गरज गरज बोली क्षत्राणी ।।
दुर्बल पर तूने हाथ उठाया । क्षत्री धर्म को नहीं अपनाया ।।
बर्बरीक बोला विनती कर के । अहिलवती के पाँव पकड़ के ।।
भूल हुई है मुझसे भारी । क्षमा करो हे मात हमारी ।।
अब नहीं ऐसी भूल करूँगा । तुम्हें पूछ कर कदम धरूँगा ।।
अहिला धीरज धर कर बोली । क्षत्री धर्म की पुस्तक खोली ।।
दुर्बल पर नहीं हाथ उठाना । कहके बचन ना कदम हटाना ।।
भिक्षुक कोई खाली न जावे । चाहे मांग वो प्राण ले जावे ।।
जन्म दाता की आज्ञा मानो । जो कछु कहदे सत्य ही जानो ।।
आओ अब तुम्हें मेवा खिलाऊँ । मीठा मीठा रस भी पिलाऊँ ।।

दोहा - माँ आज्ञा मंजूर है, चरण नवाऊँ शीश ।
दुर्बल पर नहीं हाथ उठाऊँ, अमर तेरा आशीश ।। क ।।
बचन बोलूंगा तोलकर, कहूँ वही हो जाय ।
मेरे द्वार से है मेरी माता, भिक्षुक न खाली जाय ।। ८६ ।।

।। अग्निदेव से धनुष प्राप्त करना ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
माता के संग चल दिया लाला । तीर कमान ये क्या है निराला ।।
माता इसका भेद बताओ । कहाँ बनता है हमें समझाओ ।।
मुझको ऐसा दे दो लाकर । चतुर करो मुझको सिखलाकर ।।

दोहा - समझ गई तब अहिलवती, लाला चतुर सुजान ।
प्राप्त तुम्हीं से करना चाहे, क्षत्री धर्म का ज्ञान ।। क ।।
मेवा खिलावे चाव से, बाण नीति समझाय ।
ये शृंगार है क्षत्री वंश का, कन्धे शोभा पाय ।। ८७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती ने विनती कीनी । अग्नि झट से प्रगट है कीनी ।।
हाथ जोड़ कर अर्ज गुजारी । तुम ही लज्जा रखो हमारी ।।
तुमरा लाला मुझको प्यारा । माँग रहा है धनुष विचारा ।।
बख्शो तुम्हारा है यह पायक । गर समझो कछु है यह लायक ।।
अग्नि देव ने मन्त्र उचारा । कारज पूर्ण होवे तुम्हारा ।।
धनुष आ गया आसमान से । बर्बरीक को दे दियो मान से ।।
ये धनुवा है अति शक्ति धारी । हर पल रक्षा करे तुम्हारी ।।
जल नहीं सकता गल नहीं सकता । इससे निशाना चूक नहीं सकता ।।
अग्नि देव फिर समझ के बोले । इसके वाण रखते हैं भोले ।।
शिव शंकर कैलाशी वासी । उमापति घट घट के वासी ।।
उनके पास हैं वाण तुम्हारे । इतने वश का काम हमारे ।।
तुमरे हवाले कर दिया आकर । जाता हूँ तुम्हें सब समझाकर ।।
धनुवे को मजबूत सम्भालो । रोज इसे फूल माला डालो ।।
हर पल अपने पास में रखियो । वाण तुम्हीं शिवजी से मांगियो ।।
माता तुमरी रोज सिखावे । क्षत्री धर्म का बोध करावे ।।
विद्या के लिए बाण माँगता । असली वाण शिव पास में पाता ।।
आसमान से बाण उतारे । अग्नि देव देकर के पधारे ।।
अहिलवती ने दण्डवत कीनी । चरण की रज माथे धर लीनी ।।

दोहा - माँ बेटे दोऊ चल दिये, शिव मन्दिर गये आय ।
धनुष वाण धरे पास में, सेवक को बुलवाय ।। क ।।
आये नाग हैं दौड़कर, दिन्यो शीश नवाय ।
हुक्म करो म्हारी राजकुमारी, सेवक पहुंचे आय ।। ८८ ।।

जो० - मेरी पलकों में बसने वाले, ज्योति के तेज उजारे हो ।
मेरी गोदी में चम चम चमको, देही के उजले तारे हो ।। क ।।
तेरा मोहन मुखड़ा देख देख, मेरी ममता लहरे लेती है ।
हृदय के हियाव हिलोरा दे, ममता चुम्बन ले लेती है ।। ८९ ।।

माँ अहिलवती अपने पूत्र बर्बरीक को अपने गोद में लेकर लाड़ लड़ाती है ।

।। भजन ।।

(तर्ज - याद में तेरी जाग-जाग के हम)

लाल को गोद में उठाकर के, मात अहिला यूँ प्यार करती है,
भाव हिरदय के यूँ उमड़ते है, लाल को बाँथ में वो भरती है ।। लाल... ।।

लाल को पास में बिठाया है, चाव से लाड भी लडाया है,
वारी जाती है उसकी सूरत पे, हाथ ममता का सिर पे धरती है ।। लाल... ।।

मात की आँख का वो तारा है, भीम का पुत्र ये तो प्यारा है,
उसे उस योग्य मैं बनाऊँगी, नाज धरती भी जिसपे करती है ।। लाल... ।।

ज्ञान देती है उसको शक्ति का भाव भरती है उसमें भक्ति का,
उसे क्षत्रिय धरम सिखाती है, अस्त्र-शस्त्रों की बात करती है ।। लाल... ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नाग लोक अभी हम जावेंगे । भोर होवत ही वापस आवेंगे ।।
अमृत पीवेगो मेरो लाला । ममता को चमकतो उजाला ।।
सावधान पहरे पे रहना । शिव की स्तुति मौज से करना ।।
सेवक ने झुक शीश नवाया । हुक्म सभी है समझ में आया ।।
निश्चित होकर दोनों जाओ । लाले को अमृत पिलवाओ ।।
माँ बेटे हो गये पथ गामी । नाग लोक सब से सरनामी ।।
चलने की अब सुरत लगाई । अहिला के मन खुशियाँ छाई ।।
पहुँचे नागलोक के माँही । झुक झुक करें प्रणाम सिपाही ।।

दोहा - नाग लोक डंको बज्यो, छाई खुशी अपार ।
राजकुमारी आज पधारी, संग में गोद कुमार ।। क ।।
बाशक आये दौड़ कर, महलां छायो चाव ।
गोदी उठायो दौयतो, लीनो छाती लगाय ।। ९० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक ने भी पांव दबाया । नाना-नानी से स्नेह है पाया ।।
सब को करे प्रणाम नमामी । भीम पुत्र बलधारी नामी ।।
लेवे बलिहारी नाना - नानी । वारी जावे कहती नानी ।।
फल मेवे और अनेक मिठाई । भांति भांति के थाल सजाई ।।
बर्बरीक को जलपान कराया । बाग में शिव मन्दिर दिखलाया ।।
करी है स्तुति सबने मिलकर । पेड़ो ने भी संग हिल हिल कर ।।
गूंज उठी शिव शिव की वाणी । तीनों लोक की अटल निशानी ।।
अहिलवती के अति मन भावे । यही शिवालय याद दिलावे ।।
अम्बे माता यहाँ पधारी । सफल जिन्दगी करी हमारी ।।
बोला बाशक फिर रुक रुक कर । शिव प्रतिमा के आगे झुक कर ।।
आया दोयता आपका स्वामी । हे शिव शंकर अन्तरयामी ।।
जो दिन्यो आशीष कैलाशी । तुम्हीं निभावो हे अविनाशी ।।

दोहा - हिलमिल कर विनती करी, आयो भानजो आज ।
नाग लोक है देश तुम्हारो, तुमको इसकी लाज ।। क ।।
हम तो कछु जाने नहीं, तुम जानो सब बात ।
हम पलते हैं तुम्हरी कृपा से, रहते हरदम साथ ।। ९१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती बोली मुस्काकर । धन्य हुई मैं यहां पे आकर ।।
माता पिता के दर्शन पाये । और शिवालय मन को भाये ।।
सब सखियों से प्रणाम हमारा । जिनके संग बचपन को गुजारा ।।
नाग देवों के चरणन लागूँ । तुमरी गोदी से पल कर जागूँ ।।

अमृत कुण्ड पर हम जायेंगे । लाले को अमृत पिलवायेंगे ।।
देर हो रही हमको भारी । सब सुनियो है अर्जी हमारी ।।
तुमने पाली लाड़ लड़ाई । अब तुमसे मैं हुई पराई ।।
पति की आज्ञा वही जाऊँगी । पति के दर्शन वहीं पाऊँगी ।।

दोहा - अमृत कुण्ड पर चल दिये, अहिला के संग लाल ।
सुन्दर देही बदन सुहानो, घुंघराले सर बाल ।। क ।।
नाग देव सब साथ में, कर रहे जय जय कार ।
मधुर मोहिनी गूँज है उठती, छाय गई झनकार ।। ९२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
नाग देव मनवार हैं करते । अमृत प्याला सब हैं भरते ।।
अहिलवती अपने हाथों से । लाड़ लड़ावे भर बाथों से ।।
सेवक प्याला भर भर लावे । बर्बरीक उसे अधर लगावें ।।
माता के हाथ से अमृत पीवे । कहै बाशक लाला जुग जुग जीवे ।।
बर्बरीक अमृत पीवै मगन हो । आँचल के छाया की लगन हो ।।
नाग लोक की अजब ही माया । अमृत की फलती है छाया ।।
खाली कुण्ड सभी भरते हैं । नाग देव पैदा करते हैं ।।

दोहा - अहिलवती फिर चल देई, अपने स्थाई स्थान ।
लाला संग में चल रहयो, पहुँची कोस प्रणाम ।। क ।।
बीच शिवालय जाय कर, शिव को करी प्रणाम ।
माँ बेटे दोनों रट रहे, शिवशंकर को नाम ।। ९३ ।।

।। भजन ।।

(तर्ज - धरती धौरां री....)

लेकर बर्बरीक नै साथ, पुजन करबा भोले नाथ,
शिव मंदिर मँ पहुँची मात,
हर हर बम भोले, हर बम बम भोले ।। टेर ।।
जल कलशां भर भर ल्याई, सागै मेवा फल मिठाई,
लालै न पास बिठाई, हर हर बम भोले,
फुलड़ा भाँत भाँत का न्यारा, जैं का हार बणाया प्यारा,
शिव पहनै डमरु वाला, हर हर बम भोते, हर हर बम भोले.... ।। १ ।।

ज्यूँ ज्यूँ माता करती जावै, लालौ बैनै हो दोहरावै,
माँ देख देख हरषावैं, हर हर बम भोले,
केशर चन्दन घोल बनाया, पत्ता बेल का मँगाया,
भोले का ध्यान लगाया, हर हर बम भोले, हर हर बम भोले..... ।। २ ।।

लालो जद ध्यान लगायो, शिव गौरा दरश दिखायो,
गणपत भी सागै आयो, हर हर बम भोले,
सर्पो की पहरयाँ माला, बाघम्बर डमरु वाला,
तन भस्मी रमाया आया, हर हर बम भोले, हर हर बम भोले.... ।। ३ ।।

त्रिशूल हाथ में सोहे, मस्तक पर चन्दा मोहे,
कैलाश शिखर उर जावै, हर हर बम भोले,
जल पुष्पन हार चढ़ावै, फल मेवा भोग लगावै,
मिल आरती शिव की गावै, हर हर बम भोले, हर हर बम भोले.... ।। ४ ।।

मुनि नारद ज्ञान बतावै, भक्ति को पाठ पढ़ावै,
शिव चरणां शीश झुकावै, हर हर बम भोले,
त्रिपुरारी शिव भण्डारी, जावै बर्बरीक बलिहारी,
प्रभु लीला रची निराली, हर हर बम भोल, हर हर बम भोले.... ।। ५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
लाले से जल कलश मंगाया । शिवजी को स्नान कराया ।।
झरने का जल कलश चढ़ाया । शिव को सुरीला गीत सुनाया ।।
पूजा पाठ विधी से कीनी । महादेव की आरती कीनी ।।
सेवक हुक्म के ताबेदारी । खड़े दे रहे पहरेदारी ।।
माँ बेटे गमन को धाये । धनुष बाण लाले ने उठाये ।।

।। माता अहिलवती अपने पुत्र बर्बरीक को जंगल के बीच मे ले गई और एक वृक्ष ऊपर चढ़ कर बैठ गई, अपने पुत्र को धनुष चलाने की विद्या सिखलाने लगी ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
कंधे से तुम धनुष उतारो । दोनों हाथ से पकड़ संभारो ।।
दाहिने हाथ से तीर उठाओ । धनुवे पर सज धज के लगाओ ।।
हाथ दाहिना पीछे रखना । बांया आगे मोहर धरना ।।
दाहिने से धनुवे को खींचो । ऊँगलियों से जोर कर भींचो ।।
लक्ष्य सामने नजर टिकाओ । उसी जगह पै बाण चलाओ ।।
सावधान कहीं भूल न जाना । निश्चय रहना कभी न डरना ।।
आज्ञा पाकर शीश नवाकर । बर्बरीक सम्भला धनु धारकर ।।
जैसी रीत बताई माता । उसी तरह से करता जाता ।।
सामने पर्वत मात दिखाया । उस चोटी का लक्ष्य बताया ।।
उसके लग कर तीर फिर आवे । पर्वत चोटी धरन गिर जावे ।।
बर्बरीक ने लिया निशाना । जो क्षत्री के तन का बाना ।।
मारा तीर क्रोध में आकर । बल वैभव के जोश में आकर ।।

हुई गर्जना पत्थर उछले । पर्वत धुंआ मुख से उबले ।।
आधा पर्वत चूर चूर हो । पत्थर उछले दूर दूर हो ।।
गरज हुई बन डम मग डोला । जीव जन्तु करने लगे कोल्हा ।।
वापिस तीर दौड़ता आया । बर्बरीक के हाथ में आया ।।
माता उछल छलाँग लगाई । बर्बरीक के पास में आई ।।
कर आलिंगन छाती लगायो । गोदी लेकर लाड़ लड़ायो ।।

दोहा - उस पर्वत के पास में, थी एक गुफा विशाल ।
उसमें दानव रहते काफी, लड़ते सन्मुख काल ।। क ।।
कई तो दब गये पत्थर से, घायल हुए अनेक ।
ऐसा कौन बली यहाँ आया, बाकी सब रहे देख ।। ९४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
दानव प्राणी दौड़ते आवें । जोर जोर से गरज लगावें ।।
अहिलवती ने सब कछु जाना । सभी जगह पर लगा निशाना ।।
गरज गरज कर भागे आवें । पकड़ो कहीं ये भाग न जावें ।।
बर्बरीक तब मात से बोला । क्या आज्ञा है यह क्या रोला ।।
माता बोली दानव आवें । हम दोनों को पकड़ना चाहवें ।।
धनुष सम्भालो जैसे बताया । दानव देखो भागता आया ।।
बर्बरीक ने फिर तीर चलाया । दानव का हृदय दहलाया ।।
अहिलवती तब गरज के भागी । दानव पकड़ पछाड़न लागी ।।
लाला खड़ा देखता माया । दूजा तीर तो नहीं चलाया ।।
हमरा कोई कसुर हुआ है । लाला मन में सोच रहा है ।।
अहिलवती विचरी बन क्रोधी । दानव भूले अपनी सोधी ।।

जो कोई सन्मुख लड़ने आवें । पकड़ उसे कहीं दूर भगावे ।।
जो डरता वापिस मुड़ जावे । अहिलवती नहीं हाथ लगावे ।।
दानव भागे पीठ दिखा कर । मर गये काफी दहशत खाकर ।।

दोहा - अहिला लाल के पास में, आयी होश संवार ।
बिन आज्ञा के क्यों बाण चलाया, सन्मुख से किया वार ।। क ।।
मैंने कहा था सम्भलना, न कि तीर चलाय ।
फिर तूने क्यों तीर चलाया, अभी मुझे समझाय ।। ९५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
प्रथम वार दुश्मन को मौका । ओट लेवो जब उसका झौका ।।
फिर मारो और पकड़ पछाड़ो । बदी करे तो जड़ से उखाड़ो ।।
पहले वार न करना लाला । वार पे वार करत बलवाला ।।
क्षत्री धर्म की यही कहानी । रहती उनकी अमर निशानी ।।
बर्बरीक मन में अति शरमाया । सत्य वचन हृदय में रमाया ।।
मात चरण में गिर गया आकर । वार करण की नीति पाकर ।।
अब नहीं भूल करूँ मेरी माता । इस गलती से मैं पछताता ।।
पहिले मैं नही वार करूँगा । बिन आज्ञा नहीं कदम धरूँगा ।।
अहिलवती ने गोदी भर कर । उठा लियो लाले को पकड़ कर ।।
चलो अभी जलपान करेंगे । शिव चरणों में शीश धरेंगे ।।
शिव को प्रणाम करेंगे जाकर । धन्य भाग चरण रज पाकर ।।

दोहा - सेवक बाट है जोह रहे, आये मात और लाल ।
मेवे थाल सजा रखे हैं, मीठे लाल गुलाल ।। क ।।
शिव मन्दिर में पहुँच कर, आय नवायो शीश ।
दया करो हे उमापति, महादेव जगदीश ।। ९६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
हे शिव तू ही रखवाला है । बलियों में तू बलवाला है ।।
तेरे समान नहीं कोई बलधारी । हर हर हर महादेव त्रिपुरारी ।।
दया करो प्रभू मेवा पावो । रुच रुच आ के भोग लगाओ ।।
दोनों ने मिल स्तुति कीन्हीं । शंकर की बलिहारी लीन्हीं ।।
सेवक गण ने थाल सजाया । माँ बेटे ने भोग लगाया ।।
माँ बेटे को मेवा खिलावे । निर्मल जल झरने का पिलावे ।।
खावे मेवा लाला चाव से । धन्य हुआ आंचल की छांव से ।।
बोली माता बात बताऊँ । बाण चलाना तुम्हें सिखाऊं ।।
एक बार ही समझाऊँगी । दूसरी बार न बतलाऊँगी ।।
पहली सीख से समझ सुधारो । बार बार ये कथन हमारो ।।
बर्बरीक के समझ में आई । अब नहीं गलती होगी माई ।।

।। कोशासुर राक्षस का वध ।।

दोहा - जो दानव थे बच गये, भाजे जो अकुलाय ।
निज सरदार को कथा सुनाई, कोशासुर कहलाय ।। क ।।
एक कोस में बदन हैं, ऊँचा लम्ब लटाङ्ग ।
ताड़ पेड़ सी लम्बी भुजाएं, मोटी मोटी जांघ ।। ९७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
कोशासुर ने सुनी कहानी । गरजन घोर करी अभिमानी ।।
मैं देखूँगा उस नारी को । पकड़ चबालूँ बलधारी को ।।
डूब मरो तुम दानव होकर । नार से हार मान गये रोकर ।।

डंका दे सबको बुलवावो । मद पातर को खूब सजावो ।।
देग से मोटा पातर आया । कोशासुर ने अधर लगाया ।।
पीकर मद्य चला अभिमानी । संग में प्याला यही निशानी ।।
आया जहाँ खड़ी क्षत्राणी । बोला गरभी झूठी बाणी ।।
लाले को तब किया इशारा । बर्बरीक ने मुक्का मारा ।।
पड़ा धरण पे गरदी उछली । कोशा की नैना उबली ।।
उठा जोर किलकारी मारी । तेज खड्ग दिया झोंक दुधारी ।।
बर्बरीक ने लात घुमाई । दानव के छाती पै जमाई ।।
औंधा पड़ गया दूर जाय कर । खड़ा हो गया होश पाय कर ।।
एक पहाड़ उठा के लाया । गरजन करके जोर घुमाया ।।
बर्बरीक ने उसे दूर भगाया । कोशासुर मन में घबराया ।।
बर्बरीक ने टांग पकड़ कर । नीचे पटका जोर जकड़ कर ।।
कोशासुर चिल्लाया रैंका । बर्बरीक ने चीर के फैंका ।।

दोहा - माता आई भाग कर, गोदी लियो उठाय ।
थापी दिन्हीं क्षत्राणी ने, लिन्यो हृदय लगाय ।। क ।।
जुग जुग जियो लाड़ला, अमर कहानी होय ।
सत पथ क्षत्री धर्म निभओं, सन्मुख आवे न कोय ।। ९८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
माता ज्ञान देवे अति ज्ञानि । बर्बरीक सुने चतुर सुजानी ।।
जो कोई झूठी बात निकाले । उसको क्षमा नहीं करना लाले ।।
आओ चलेंगे अब घूमन को । बन में होय मगन झूमन को ।।
आगे आगे माता चलती । माथे तेज किरण है निकलती ।।

बन में घूमें निर्भय प्राणी । देती ज्ञान नीति क्षत्राणी ।।

।। शिव जी से तीन बात प्राप्त करना ।।

दोहा - शिव मन्दिर में आ गये करते बात विचार ।
माँ बेटे के पास में, बैठे पहरेदार ।। क ।।
मेवा फल को खा रहे, मन में खुशी अपार ।
नाग लोक के सेवक जग में, कभी न मानें हार ।। ९९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
शिव शंकर की आरती कीन्ही । अहिलवती ने दण्डवत कीन्हीं ।।
विधि विधान से पूजा करके । परिक्रमा करी मगन हो फिरके ।।
बर्बरीक बैठा आसन लगाये । शिव शिव शंकर रटता जाये ।।
पलक लगाई ध्यान मगन हो । कीनी स्तुति मन में मगन हो ।।
हे शिव शंकर तूं रखवाला । पुकार करे अहिला का लाला ।।
आओ आओ शिव महादेवा । माँ बेटे हम करेंगे सेवा ।।
सच्चा नाता तुमरा पाया । माता जी ने ज्ञान कराया ।।
शिव जी मेरे तुम हो स्वामी । घट घट वासी अन्तर्यामी ।।
तुम्हें पुकारूँ कारज सारो । तुम बिन जग में कौन हमारो ।।
बर्बरीक के मन में समाई । अखण्ड तपस्या शिव के लगाई ।।
हृदय शिव शिव शिव की वाणी । दूर खड़ी देखे क्षत्राणी ।।
लाला अब नहीं पलक उघारे । मुख से भी नहीं शब्द पुकारे ।।

दोहा - आये सेवक दौड़ कर, अहिलवती के पास ।
बहुत देर हुई पलक लगाये, ये कैसा अभ्यास ।। क ।।
किस मधुवन में खो गया, क्यों न उघारे नैन ।
पहरेदार खड़े सोचे हैं, नहीं हृदय में चैन ।। १०० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती सब समझ रही है । सेवक गण को बता रही है ।।
ये शिव प्रेम भक्ति में खोया । पलक लगा कर मौन ये होया ।।
तुम पहरे पर चौकस रहना । जो कछु बीते मुझको कहना ।।
मैं इसको नहीं छोड़ के जाऊँ । आसन लाला पास लगाऊँ ।।
अहिलवती ने पलक लगाई । आओ आओ अम्बे माई ।।
तुमने जीवन दिया है माता । तुमही राखो लाड़ का नाता ।।
मेरा लाला अरज गुजारे । तुमरे बिन काज कौन संवारे ।।
शिव के दर्शन की अभिलाषा । लाले को निश्चय है आशा ।।
दया करो माँ दर्श दिखाओ । शिव शंकर को साथ में लाओ ।।
मैं तुमरी मनवार करूँगी । थारे चरण में शीश धरूँगी ।।
अहिलवती आवाज लगावे । पार्वती शिव को बुलवावे ।।
दया करो हे मात भवानी । हे ब्रह्माणी कमला रानी ।।
अहिलवती ने पलक लगाई । खड़े देखते चारों सिपाही ।।

दोहा - माँ बेटे दोऊ लगन में, लई तपस्या धार ।
पलक लगाई मौन होय कर, शिव शिव मन में उचार ।। क ।।
ख़ामोशी बन छा गई, गयो सनाटो छाय ।
जीव जन्तु सब मौन हो गये, कोई आवाज न आय ।। १०१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
इतने में ही बाशक आये । अहिला को आवाज लगाये ।।
दौड़ के पहरेदार हैं आये । खड़े हो गये फण को झुकाये ।।
मुख से कछु ना बानी निकले । बाशक जी भर क्रोध में बिचले ।।

क्या अनहोनी तुम पर होई । अहिलवती क्या नींद में सोई ।।
बर्बरीक भी कहाँ गया है । क्या वो भी कहीं सोय गया है ।।
पहरेदार तो कुछ नहीं बोले । चिन्तित हो चरणों में डोले ।।
बाशक दौड़ शिवालय आये । देख के लीला मन मुस्काये ।।
ध्यान लगन में राज दुलारी । तुम्हें देख मुझे खुशी अपारी ।।
शिवजी यहाँ पर निश्चय आवे । माँ बेटे को धीर बँधावें ।।
शिव दरबार अभी मैं जाऊँ । महादेव के दर्शन पाऊँ ।।
जब तुम्हें शिवजी याद करेंगे । मेरे हृदय में प्रेम भरेंगे ।।
तब सब कुछ कह दूँगा बतियां । क्षमा करा दूँ सारी गलतियां ।।
बाशक जी ने उड़ान लगाई । शिव चरणों में सुरत टिकाई ।।

दोहा - शिवजी बैठे धार कर, कई रोज का तप ।
अखण्ड तपस्या मौन धर, करते मन में जप ।। क ।।
पार्वती जी पास में, बैठी ध्यान लगाय ।
अहिलवती की मधुरी वाणी, भणकार पड़ी है आय ।। १०२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मात पार्वती बात बिचारे । अहिलवती मुझे काहे पुकारे ।।
कैसे जाऊँ छोड़ पति को । धर्म नष्ट होवत है सती को ।।
कौन उपाय करूँ इस बेला । नहीं बुलाई मुझको पहला ।।
हे अहिला तुझे क्या दुख आया । काहे मेरा ध्यान डिगाया ।।
सोच रही थी अम्बे भवानी । पार्वती जी कमला रानी ।।
इतने में हुई ऐसी माया । शंकर आसन पे नहीं पाया ।।
दूर दौड़ कर नजर घुमाई । नहीं कहीं शिव की परछाई ।।

कहाँ चले गये हो त्रिपुरारी । पति देव शिवजी तपधारी ।।
इतने में ही बाशक आया । मात चरण में शीश नवाया ।।
कहाँ गये हैं नाथ हमारे । बाशक मधुर वाणी पुकारे ।।

दोहा - पार्वती जी कह दई, अदृश्य हो गये नाथ ।
कोई भक्त पर भीड़ पड़ी है, देवन ताई साथ ।। क ।।
शीघ्र प्रभुजी आयेंगे, जोवो आसन बाट ।
किसी भक्त के आज होवेंगे, अजब निराले ठाट ।। १०३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती के पहरेदारी । मंदिर में उठ रहे सवारी ।।
माँ बेटे नहीं पलक उघारें । पहरेदारी याही बिचारें ।।
ना कछु पीवें ना कछु खावें । शिवजी के नहीं भोग लगावें ।।
बेठे हैं आसन को लगाये । क्या कछु लीला समझ न पाये ।।
इतने में ही शंख बजे हैं । नभ ऊपर विमान सजे हैं ।।
उन पर देव देहशत धारी । शंख की ध्वनियाँ आन उच्चारी ।।
प्रगट हुए शिव अन्तर्यामी । बर्बरीक ढ़ींग आये स्वामी ।।
पलक उघारो अहिला के लाला । बोले शिवजी जग रखवाला ।।
बर्बरीक ने पलक उघारी । चरणों में लिपटा बलधारी ।।
तब बोले महादेव ये बाणी । पलक उघारो तुम क्षत्राणी ।।
अहिला उनके सन्मुख आयी । जिनको कर मनवार बुलायी ।।
शिव चरणन में लिपट क्षत्राणी । जय जयकार की बोले वाणी ।।
माँ बेटे ने आरती कीनी । शिव साक्षी चरणां रज लीनी ।।
आशीष देकर शंभू बोले । अन्तर के पट पलक में खोले ।।
वर मांगो कछु हमसे निशानी । बर्बरीक तुम हो बलवानी ।।

दोहा - बर्बरीक ने कर जोड़े, कह देई मन की बात ।
धनूष दिया है अग्निदेव ने, हे त्रिलोकी नाथ ।। क ।।
बाण आपके पास में, देवो हे दयावान ।
तुमरी कृपा से मैं बन जाऊँ, बलियों में बलवान ।। १०४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती ने अरज गुजारी । बख्शो बख्शो हे त्रिपुरारी ।।
बोले शम्भू बात कहूँगा । वचन भरो तो बाण देऊँगा ।।
वचन विमुख तुम हो नहीं जाना । सब सिद्धि ले सफलता पाना ।।
बर्बरीक बोले विनती कर के । अपने हृदय में निश्चय करके ।।
आपकी आज्ञा नहीं ठुकराऊँ । बचन लेवो में शीश नवाऊँ ।।
तीन बाण शिवजी ने मंगवाये । देवन अपने शंख बजाये ।।
ये लो तीन बाण बलवानी । जिसकी सुनाऊँ तुम्हें कहानी ।।
एक बान से सेना सारी । मृत्यु शरण आवे नर नारी ।।
सब जीवों का छेदन करता । आवे वापस बाण लपकता ।।
दो तो तुम्हारे पास बचेंगे । तरकस में ये खूब सजेंगे ।।
तीजा आकर ही मिल जावे । दिग विजयी ये बाण कहावे ।।
तीन बाण तो सृष्टि छेदन । इक मुहुरत में कर दे विन्धन ।।
इनके सन्मुख कोई न आवे । आवे जो कोई बच न पावे ।।

दोहा - वचन सम्भालो हे बली, कहता हूँ जो बात ।
शंकर बोले बर्बरीक से, मुल्लक मुल्लक कई स्यात ।।
जिस रण पक्ष में हार हो, उसका देवो साथ ।
अमर तुम्हारा नाम हो, कहलावोगे नाथ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अहिलवती जब सुनी ये बानी । हार की पक्ष लेवे बलवानी ।।
समझ न आये याही कहानी । मन में सोच रही क्षत्राणी ।।
बर्बरीक शीश नवाकर बोले । हे शिव शंकर बम बम भोले ।।
आप की आज्ञा पूर्ण निभाऊँ । बचन विमुख नहीं होने पाऊँ ।।
हार की पक्ष में जाय लड़ूँगा । हर ताकत के सन्मुख अड़ूँगा ।।
आशीश दीनो है त्रिपुरारी । बलियों में तुम हो बलकारी ।।
तुम्हरे सम्मुख कोई न अड़ेगा । जगत पति भी नहीं लड़ेगा ।।
इतनी कहकर अन्तरध्यानी । पहुँच गये जहाँ बैठी भवानी ।।

दोहा - शिव शंकर को देखकर, बाशक करी प्रणाम ।
पार्वती ने चरण रज लीनी, अपनी मांग में थाम ।। क ।।
कहाँ गये मेरे देवता, बिन कहे कोई बात ।
मैं भी चरण की चेरी हूँ, हो तुम जग के नाथ ।। १०६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मुस्काकर बोले त्रिपुरारी । हमरे जंचती बात तुम्हारी ।।
यदि कोई भक्त मुझे बुलावे । प्रेम विवश कर तुम्हें भुलावे ।।
जाना पड़ता हमको पल में । चाहे नभ जल हो कोई थल में ।।
बाशक जी कछु कहना चाहवें । पर हृदय में अति सकुचावें ।।
मन में उथल पुथल होवत है । अहिलवती भी बाट जोवत है ।।
पार्वतीजी बात बिचारें । बाशक बीच में कैसे उचारें ।।
बाशक खड़ा झूलता डोले । पार्वती से शम्भू बोले ।।
बाशक पुत्री मेरी दुलारी । उसके जन्म लिया बलधारी ।।

उसने बुलाया तप करते को । निडर किया जाकर डरते को ।।
देव शक्ति बालक अवतारी । पहले तुमसे बात बिचारी ।।
धनुष तो अग्नि देव से पाया । बाण जाय मैने पहुँचाया ।।
इस कारण वश जाना पड़ा था । बलवानी खड़ा बात अड़ा था ।।
बाशक जी को चैन आ गया । खुशियों का बादल ही छा गया ।।
पार्वती जी मगन हो गई । खुश होकर चरणों में सो गई ।।

दोहा - अहिलवती पुजा करे, शिव महिमा है अपार ।
झरने का जल कलश चढ़ावे, और फूलों का हार ।। क ।।
लाला बैठा पास में, विनती में अति लीन ।
तीन बाण कन्धे पर साजे, बल में चतुर प्रवीण ।। १०७ ।।